RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER

SYLLABUS FOR SCREENING TEST FOR THE POST OF

RURAL AYURVED CHIKITSAK,

AYURVED DEPARTMENT

1 शारीर

1. प्रकृति का निर्धारण , भेद व स्वरूप (देह व सत्त्व) ।
2. पुरुष – भेद एवं स्वरूप (एकधात्वात्मक, षड्धात्वात्मक, चतुर्विंशति तत्त्वात्मक) ।
3. गर्भ विकास, पोषण एवं वृद्धिकर भाव ।
4. आनुवंशिक–सिद्धान्त, मातृज–पितृज आदि भाव ।
5. प्रमाण शारीर, अस्थि–संधि–पेशी–कण्डरा–संख्या शारीर ।
6. स्रोतस्–शारीर एवं विविध–संस्थान ।
7. कोष्ठांग–शारीर, उत्तमांग–शारीर ।
8. दोष–धातु–मल–क्रिया विज्ञान ।
9. जाठराग्नि–भूताग्नि व धात्वग्नि विवेचन ।
10. ज्ञानेन्द्रिय रचना एवं क्रिया व्यापार ।
11. अन्तःस्रावि–ग्रन्थियाँ ।
12. अतुल्य गोत्र में गर्भधारण सिद्धान्त ।

2 स्वस्थवृत्त

1. विविध–चर्या (दिन, ऋतु, रात्रि चर्या) सद्वृत्त, धारणीय – अधारणीय वेग, प्रज्ञापराध । ग्रामीण रहन–सहन के हानि–लाभ ।
2. आहारविधिविशेषायतन, आहारविधिविधान, संतर्पण–अपतर्पण जन्य रोग, भोजन के आवश्यक अवयव एवं संतुलित आहार, आहारमात्रापरिज्ञान ।
3. पोषण एवं मातृ – शिशु स्वास्थ्यसंबंधी राष्ट्रीय कार्यक्रम ।
4. मलेरिया, अंधता, कुष्ठ एवं राजयक्ष्मा रोगनिवारण कार्यक्रम ।
5. W.H.O.,केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार प्रवर्तित स्वास्थ्य कार्यक्रम, राष्ट्रीय कार्यक्रम में आयुर्वेद सहित वैकल्पिक विधियों की उपादेयता ।
6. उपस्तंभ परिचय (आहार, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य) ।
7. वायु–जल–ध्वनि–देश (भूमि), काल का विकृत स्वरूप लक्षण एवं निवारण । पर्यावरण प्रदूषण ।
8. ग्रामीण परिवेश में जल – मल निर्हरण व्यवस्था, अपद्रव्य निवारण, ग्रामीण क्षेत्र के अपद्रव्य एवं उनका निवारण ।
9. शव विनाश विधियाँ ।
10. ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित लघु/कुटीर उद्योग एवं उनका स्वास्थ्य पर प्रभाव । रजो–धूम–आतप–अनिल के हानिकारक प्रभाव एवं बचाव ।
11. HIV/AIDS एवं दूषित जल जनित व्याधियाँ व उनका बचाव । विशेषकर अस्थि–संधिगत रोगों में आयुर्वेदीय उपक्रम एवं उपचार । जनपदोध्वंस, विविध संक्रामक रोग एवं बचाव , संसर्गज रोग ।
12. व्याधि क्षमत्व तथा विविध टीकाकरण ।
13. प्राकृतिक चिकित्सा विधियाँ एवं अष्टांग योग का परिचय तथा यौगिक क्रियाओं से स्वास्थ्य संरक्षण ।

3 द्रव्य गुण, रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना तथा अगद तंत्र

A.
1. द्रव्य गुण विज्ञानगत सप्त पदार्थों द्रव्य, रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव एवं कर्म का विस्तृत परिचय, द्रव्य का पाँचभौतिकत्व, द्रव्य का वर्गीकरण ।
2. विविध कर्म यथा–दीपन, पाचन, शोधन, शमन अनुलोमन विरेचन, संग्राही आदि ।
3. ग्रामीण अंचल में होने वाली वनस्पतियों के संरक्षण के उपाय ।
4. द्रव्य–संकलन–संग्रहण–संरक्षण एवं प्रसंस्करण विधियाँ ।
5. ग्वारपाठा, गिलोय, पुनर्नवा, अपामार्ग, अडूसा, कटेरी, गोखरू, खरेंटी, अर्क, स्नुही, असगंध, शतावर, अमलताश, भुई आंवला आदि ग्रामीण क्षेत्र में होने वाली वनस्पतियों का प्रयोगात्मक विशिष्ट–ज्ञान ।
6. औषधमात्रानिर्धारण–सिद्धान्त, भेषज–प्रयोग वर्णन ।
7. विविध प्रचलित निघण्टु एवं उनका वैशिष्ट्य ।
8. आयुर्वेदीय स्नातक–स्तर पर अधीत वानस्पतिक, खनिज एवं जान्तव द्रव्यों का गुण–कर्मात्मक परिचय

B.
1. रस शास्त्र सम्मत रस निरुक्ति एवं परिभाषा ।
2. रस शास्त्रीय विविध परिभाषायें–यथा पंचामृत, कज्जली, अपुनर्भव आदि ।
3. यन्त्र–मूषा–कोष्ठी एवं पुटों का प्रयोजन एवं परिचय ।
4. रस–संस्कार एवं मूर्च्छना ।
5. रस, महारस, उपरस, रत्न, उपरत्न, धातु उपधातु, विषों एवं उपविषों का वर्गीकरण एवं उनका शोधन मारण
6. औषध मानकीकरण ।

C.
1. पंचविध–कषायकल्पना , संधानकल्पना एवं पथ्यकल्पना का निर्माण, मात्रा एवं प्रभावतः परिज्ञान ।
2. स्नेह पाक विधि, लेप–रसक्रिया–गुटिका–अवलेह–सार–सत्व–अंजन–आश्च्योतन–विड़ालक क्षीरपाक–पुटपाक आदि का परिज्ञान ।
3. आयुर्वेदीय स्नातक स्तर पर अधीत रस–योगों व भैषज्य–योगों का निर्माण, प्रयोग एवं मात्रा परिज्ञान ।
4. प्राच्य प्रतीच्य मतानुसार मान परिज्ञान ।

D.
1. विष परिभाषा–योनि–भेद व वर्गीकरण ।
2. दूषी एवं गर विष ।
3. सविष आहार द्रव्य परीक्षण, शंकाविष ।
4. ग्रामीण परिवेश में आहार की पर्युषितता एवं विषाक्तता । ग्रामीण क्षेत्र में होने वाले सामूहिक–भोज में असावधानियाँ एवं तज्जन्य विषाक्तता का प्रभाव व बचाव ।
5. विष के सामान्य चिकित्सा कर्म एवं विविध उपक्रम ।
6. चिकित्सक की साक्षी संबंधी नियम परिज्ञान ।
7. आयु विनिर्णय, मृत्यु का व्यवहारायुर्वेदीय पक्ष, मृत्यूत्तर–संकोच, मृत्युकाल–निर्णय ।
8. अभिघात–भेद, दग्ध–प्रकार एवं इनका व्यवहारायुर्वेदीय परिज्ञान ।
9. जलमग्न का आत्ययिक उपचार तथा जलमग्न के मृत्यूत्तर लक्षण ।
10. व्यभिचार, अप्राकृतिक मैथुन, गर्भपात, भ्रूण हत्या, नपुंसकता एवं कौमार्य का व्यवहारायुर्वेदीय ज्ञान।
11. चिकित्सक के कर्तव्य, नियम, व्यावसायिक अधिकार एवं गोपनीयता ।

4. रोग एवं विकृति विज्ञान

1. व्याधि–वर्गीकरण, निदानपंचक , षट्क्रियाकाल का नैदानिक महत्त्व ।
2. दोष धातु मलों का विकृति विज्ञानीय अध्ययन ।
3. ओजो विकार , लक्षण एवं तज्जन्य–व्याधियाँ ।
4. व्याधि – अवस्था (साम–निराम आदि) ।
5. विविध रोगी – परीक्षा (त्रिविध षड्विध, अष्टविध) ।
6. धातु, उपधातु, मल एवं इन्द्रिय–प्रदोषज विकारों का पूर्ण परिज्ञान ।
7. कोष्ठ व शाखागत विकार ।
8. रोगोत्पत्ति में स्रोतस् का महत्त्व ।
9. विकृति विज्ञानीय परीक्षण (प्रयोगशालीय रक्त, मूत्र, मल, ष्ठीवन एवं वीर्य के विविध परीक्षण) ।
10. आयुर्वेदीय स्नातक स्तरीय अधीत रोगों का रोग एवं विकृति विज्ञानीय अध्ययन ।

5. प्रसूति–स्त्रीरोग एवं कौमारभृत्य

A
1. स्त्री शारीर का विशिष्ट–परिज्ञान, स्त्री–शुक्र,रज, ऋतुकाल, ऋतुमती एवं रजोनिवृत्ति का परिज्ञान ।
2. गर्भावक्रान्ति, मासानुमासिक गर्भवृद्धि एवं गर्भपोषण, अपरा–निर्माण गर्भ–आसन,अवतरण एवं उदय ।
3. सद्योगृहीतगर्भा के लक्षण, पुंसवन विधि, गभोपघातकरभाव, दोहृद लक्षण एवं अवमानना के दुष्प्रभाव ।
4. गर्भ व गर्भिणी व्यापद् एवं इनका निवारण ।
5. गर्भिणी स्वास्थ्य परीक्षण एवं स्वास्थ्य निर्देश ।
6. आसन्नप्रसवा, उपस्थितप्रसवा के लक्षण, सूतिकागार व्यवस्था, नवजातशिशु परिचर्या ।
7. प्रसव–व्यापद् एवं चिकित्सा व्यवस्था ।
8. ग्रामीण क्षेत्र में होने वाले सामान्य प्रसव में अपेक्षित सावधानियाँ ।
9. सूतिका परिचर्या का पूर्ण परिज्ञान ।
10. ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित सूतिका परिचर्या एवं प्रयुक्त किये जाने वाले रसायन–प्रयोगों की वैज्ञानिकता । सूतिका परिचर्या में प्रयुक्त सोंठ, अजवायन, गौंद एवं अन्य औषधियों के रसायन परक प्रयोग का परिज्ञान ।
11. योनि व्यापद् एवं स्नातक स्तर पर अधीत स्त्रीरोगों का निदान चिकित्सात्मक अध्ययन ।
12. गर्भपात एवं गर्भ स्राव का उपचार ।
13. गर्भाशय विकार एवं शल्य कर्म ।

B.
1. कौभारभृत्य की परिभाषा एवं महत्त्व, गर्भ, बाल,कुमार, युवा आदि की परीक्षा ।
2. सद्योजात–जातमात्र–नवजात–बालक परिचर्या, स्तन्याभाव में पथ्य, स्तन्य परीक्षा एवं दोष–निवारण के उपाय
3. बालक की मनोदैहिक वृद्धि व विकास ।
4. बालकों की विशिष्ट परीक्षा विधि, वयोअनुसार औषध–मात्रा निर्धारण ।
5. काश्यपसंहिता का वेदनाध्याय ।
6. दन्तोद्गम जन्य व्याधियाँ व चिकित्सा ।
7. सहज, प्रसवकालिक एवं प्रसवोत्तर व्याधि–परिचय, लक्षण एवं चिकित्सा ।
8. ग्रामीण क्षेत्रों के बालकों में अनूर्जता के कारण एवं उनका निवारण ।

6. काय चिकित्सा पंचकर्म एवं रसायन–वाजीकरण

1. काय शब्द की निरुक्ति, चिकित्सा की परिभाषा, पर्याय ।
2. विविध उपक्रम, चिकित्सा के भेद ।
3. काय–चिकित्सा में अग्नि–वैकारिकी का महत्व एवं उससे उत्पन्न प्रमुख व्याधियों की चिकित्सा ।
4. स्रोतोगत व्याधियाँ एवं उनकी चिकित्सा ।
5. धातु प्रदोषज व्याधियों की चिकित्सा–व्यवस्था ।
6. आत्ययिक–चिकित्सा प्रबंधन, मानस रोगों की चिकित्सा का सामान्य सिद्धान्त ।
7. संशोधन के पूर्व कर्म, स्नेहन, स्वेदन एवं संसर्जन क्रम ।
8. वमन कर्म, विरचेन कर्म एवं बस्ति कर्म परिज्ञान, इनके व्यापद् व चिकित्सा ।

9. शिरो विरचेन के भेद एवं प्रक्रिया ।
10. विभिन्न कल्प – चिकित्सा ।
11. ग्रामीण क्षेत्र में शीत ऋतु में सेवनीय परम्परागत रसायन हल्दी, मेथी, सौंठ, अजवायन, खरेंटी, अश्वगंधा, गौंद व ग्वारपाठा आदि की प्रयोग–विधि एवं प्रभाव ।
12. काय चिकित्सा में स्नातक स्तर पर अधीत रोगों का निदान एवं औषध योग सहित चिकित्सात्मक परिज्ञान ।

7 शल्य एवं शालाक्य

1. शल्य की परिभाषा,व्रण,व्रणशोथ, विद्रधि की परीक्षा, स्थान आकृति एवं अधिष्ठानानुसार भेद, उपद्रव, दोष तथा साध्यासाध्यता ।
2. अस्थि भग्न के प्रकार, लक्षण एवं उनकी चिकित्सा तथा आत्ययिक उपक्रम ।
3. क्षुद्र रोगों का निदान व चिकित्सा ।
4. अर्श शब्द की निरुक्ति, भेद एवं गुद रोगों की चिकित्सा ।
5. अर्बुद के प्रकार एवं कर्कटार्बुद का आयुर्वेद एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार विशिष्ट चिकित्सा उपक्रम ।
6. शस्त्र कर्म में पूर्व कर्म, प्रधान कर्म एवं पश्चात् कर्म की विधियाँ एवं उनका महत्व ।
7. छिद्रोदर, बद्धगुदोदर एवं जलोदर में विशिष्ट शल्य चिकित्सा ।
8. क्षार–कर्म, अग्नि कर्म एवं रक्तमोक्षण ।
9. स्नातक स्तरीय अध्ययन में पठित विभिन्न शल्य रोगों का निदान – चिकित्सात्मक – अध्ययन ।
10. शालाक्य की निरुक्ति, परिचय एवं परिभाषा ।
11. नेत्र शुक्लगत एवं दृष्टिगत रोगों की संख्या, निदान एवं चिकित्सा ।
12. नेत्र शारीर का प्रमाण, पाँचभौतिकत्व एवं नेत्र परीक्षण ।
13. आश्च्योतन, पुटपाक, तर्पण, बिड़ालक, अंजन, पिण्डी व स्वेदन विधि का परिज्ञान ।
15. शिरो रोगों की संख्या, निदान एवं चिकित्सा ।
16. कर्ण एवं नासागत रोगों की संख्या, निदान, लक्षण व चिकित्सा ।
17. मुखरोग, औष्ठ, दन्त एवं जिव्हागत रोगों के कारण लक्षण व चिकित्सा ।

8 मौलिक सिद्धान्त व इतिहास

1. चरक पूर्वार्द्ध एवं चरक उत्तरार्द्ध ।
2. अष्टांग हृदय सूत्र स्थान ।
3. आयुर्वेद का इतिहास ।

* * * * *